ତମସୋ ମା ଜ୍ୟୋତିର୍ଗମୟ

कमला नेहरु महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर

हिन्दी विभाग : ई–पत्रिका

हिन्दी भारती

सितम्बर – 2018

दशहरे की हार्दिक शुभकामनाएँ

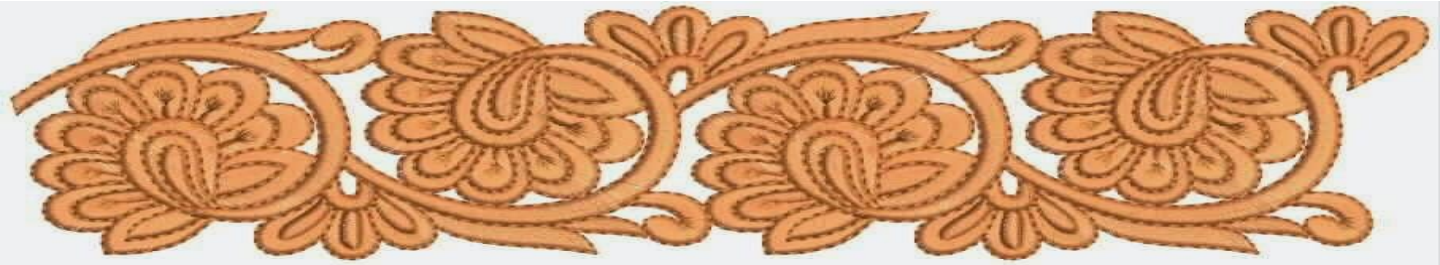

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत

कु. सस्मिता महंती

संपादकीय

"सभी पाठकों को दशहरे की हार्दिक शुभकामनायें"

"हिंदी भारती" का सितंबर अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारी ई - पत्रिका ने हमेशा प्रयास किया है कि छात्राओं में निहित सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती रहे। अतः इस अंक के मुखपृष्ठ की रूपकल्पना एवं अन्य चित्र संयोजन भी विभाग की छात्रा एवं पत्रिका की सह संपादिका कु. सोनाली राउत ने किया है। पत्रिका के इस अंक में "आपकी बात" शीर्षक के अंतर्गत विभाग की छात्राओं के अभिभावकों की प्रतिक्रियायें शामिल की गई हैं, जो इस बात को दर्शाता है कि हिंदी भारती अब घर के हर सदस्य तक पहुँचने लगी है। कृपया अपनी बात इसी तरह हम तक पहुँचाते रहियेगा क्योंकि "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है।

हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ. सं.
1.	नवरात्री	लेख (संग्रहित)	सोनिया नायक	5
2.	बंगाल में दुर्गा पूजा	लेख (संग्रहित)	सोनाली सेठी	8
3.	साहित्य और सिनेमा	लेख	लिज़ा मिश्र	10
4.	धर्मवीर भारती	लेखक परिचय		12
5.	प्रेमचंद के उपन्यासों में तत्कालीन समाज	लेख	सोनाली राउत	14
6.	बरगद	कहानी	पिंकी सिंह	16
7.	मनुष्य का आभूषण सज्जनता	लेख (संग्रहित)	सोनाली राउत	17
8.	गौरा पंत 'शिवानी'	लेखक परिचय		19
9.	छोटी सी चीज में बड़ी बात	संग्रहित	शरीफा शरवारी	21
10.	तीन साधू	कहानी(संग्रहित)	हाफिजा	22
11.	ना मैं हूँ महान ना तुम हो महान	कविता(संग्रहित)	हाफिजा	23
12.	शिक्षक	कविता(संग्रहित)	सोनाली राउत	24
13.	बेटी	कविता(संग्रहित)	शरीफा शरवारी	24
14.	सपने	कविता(संग्रहित)	मनीषा साहू	25
15.	आपकी बात	संदेश		26
14.	बाबा नागार्जुन	यू ट्यूब लिंक		28
15.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	29

नवरात्रि

नवरात्रि एक हिंदू पर्व है। नवरात्रि का अर्थ होता है नौ रातें। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवाँ दिन दशहरे के नाम से प्रसिद्ध है। नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। पौष, चैत्र, आषाढ़, अश्विन महिनों में तीन देवियों- महालक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के नौ रूपों की पूजा होती है, जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। दुर्गा का मतलब जीवन के दुख को हटानेवाली होता है। नवरात्रि एक महत्वपूर्ण त्योहार है जिसे पूरे भारत में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है।

नौ देवियाँ है :-

- शैलपुत्री - इसका अर्थ- पहाड़ों की पुत्री होता है।
- ब्रह्मचारिणी - इसका अर्थ- ब्रह्मचारीणी।
- चंद्रघंटा - इसका अर्थ- चाँद की तरह चमकने वाली।
- कूष्माण्डा - इसका अर्थ- पूरा जगत उनके पैर में है।
- स्कंदमाता - इसका अर्थ- कार्तिक स्वामी की माता।
- कात्यायनी - इसका अर्थ- कात्यायन आश्रम में जन्मि।
- कालरात्रि - इसका अर्थ- काल का नाश करने वली।
- महागौरी - इसका अर्थ- सफेद रंग वाली मां।
- सिद्धिदात्री - इसका अर्थ- सर्व सिद्धि देने वाली।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम श्रीरामचंद्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था और उसके बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया और विजय प्राप्त की। तब से असत्य, अधर्म पर सत्य, धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की

जाती है। माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है।

नवदुर्गा और दस महाविद्याओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दशमहाविद्या अनंत सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

प्रमुख कथा

लंका-युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडी देवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा और बताए अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ एक सौ आठ नीलकमल की व्यवस्था की गई। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरता के लोभ में विजय कामना से चंडी पाठ प्रारंभ किया। यह बात इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से श्रीराम के पास पहूँचाई और परामर्श दिया कि चंडी पाठ यथासभंव पूर्ण होने दिया जाए। इधर हवन सामग्री में पूजा स्थल से एक नीलकमल रावण की मायावी शक्ति से गायब हो गया और राम का संकल्प टूटता-सा नजर आने लगा। भय इस बात का था कि देवी माँ रुष्ट न हो जाएँ। दुर्लभ नीलकमल की व्यवस्था तत्काल असंभव थी, तब भगवान राम को सहज ही स्मरण हुआ कि मुझे लोग 'कमलनयन नवकंच लोचन' कहते हैं, तो क्यों न संकल्प पूर्ति हेतु एक नेत्र अर्पित कर दिया जाए और प्रभु राम जैसे ही तूणीर से एक बाण निकालकर अपना नेत्र निकालने के लिए तैयार हुए, तब देवी ने प्रकट हो, हाथ पकड़कर कहा- राम मैं प्रसन्न हूँ और विजयश्री का आशीर्वाद दिया। वहीं रावण के चंडी पाठ में यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों की सेवा में ब्राह्मण बालक का रूप धर कर हनुमानजी सेवा में जुट गए। निःस्वार्थ सेवा देखकर ब्राह्मणों ने हनुमानजी से वर माँगने को कहा। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- प्रभु, आप प्रसन्न हैं तो जिस मंत्र से यज्ञ कर रहे हैं, उसका एक अक्षर मेरे कहने से बदल दीजिए। ब्राह्मण इस रहस्य को समझ नहीं सके और तथास्तु कह दिया। मंत्र में जयादेवी... भूर्तिहरिणी में 'ह' के स्थान पर 'क' उच्चारित करें, यही मेरी इच्छा है। भूर्तिहरिणी यानी कि प्राणियों की पीड़ा हरने वाली और 'करिणी' का अर्थ हो गया प्राणियों को पीड़ित करने वाली, जिससे देवी रुष्ट हो गईं और रावण का सर्वनाश करवा दिया। हनुमानजी महाराज ने श्लोक में 'ह' की जगह 'क' करवाकर रावण के यज्ञ की दिशा ही बदल दी।

धार्मिक क्रिया

चौमासे में जो कार्य स्थगित किए गए होते हैं, उनके आरंभ के लिए साधन इसी दिन से जुटाए जाते हैं। क्षत्रियों का यह बहुत बड़ा पर्व है। इस दिन ब्राह्मण सरस्वती-पूजन तथा क्षत्रिय शस्त्र-पूजन आरंभ करते हैं। विजयादशमी या दशहरा एक राष्ट्रीय पर्व है। अर्थात आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल तारा उदय होने के समय 'विजयकाल' रहता है। यह सभी कार्यों को सिद्ध करता है। आश्विन शुक्ल दशमी पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध और श्रवण नक्षत्रयुक्त सूर्योदयव्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। अपराह्न काल, श्रवण नक्षत्र तथा दशमी का प्रारंभ विजय यात्रा का मुहूर्त माना गया है। दुर्गा-विसर्जन, अपराजिता पूजन, विजय-प्रयाग, शमी पूजन तथा नवरात्र-पारण इस पर्व के महान कर्म हैं। इस दिन संध्या के समय नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। क्षत्रिय/राजपूतों इस दिन प्रातः स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर संकल्प मंत्र लेते हैं। इसके पश्चात देवताओं, गुरुजन, अस्त्र-शस्त्र, अश्व आदि के यथाविधि पूजन की परंपरा है। नवरात्रि के दौरान कुछ भक्त **उपवास और प्रार्थना**, स्वास्थ्य और समृद्धि के संरक्षण के लिए रखते हैं। भक्त इस व्रत के समय मांस, शराब, अनाज, गेहूं और प्याज नहीं खाते। नवरात्रि और मौसमी परिवर्तन के काल के दौरान अनाज आम तौर पर परहेज कर दिया जाते है क्योंकि मानते है कि अनाज नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता हैं। नवरात्रि आत्मनिरीक्षण और शुद्धि की अवधि है और पारंपरिक रूप से नए उद्यम शुरू करने के लिए एक शुभ और धार्मिक समय।

सोनिया नायक, +3 तृतीय वर्ष

बंगाल में दुर्गा पूजा

बंगाल में दुर्गा पूजा की तैयारियाँ काफी पहले से शुरू हो जाती है। यहां पंचमी से शुरुआत होती है। महाकाली की नगरी कोलकाता में तो पांच दिनों तक श्रद्धा और आस्था का ज्वार थमने का नाम नहीं लेता।

इन पूजा के चार दिनों में सभी लोग खुशियाँ मनाते हैं। जिस प्रकार लड़की विवाह के बाद अपने मायके आती है, उसी प्रकार बंगाल में श्रद्धालु इसी मान्यता के साथ यह त्योहार मनाते है कि दुर्गा माँ अपने मायके आई हैं।

दुर्गा पूजा का त्योहार देवी दुर्गा और राक्षस महिषासुर के बीच हुए युद्ध के तहत बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि राक्षस महिषासुर ने कई वर्षों तक तपस्या और प्रार्थना कर भगवान ब्रह्मा से अमर होने का वरदान मांगा, महिषासुर की भक्ति से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने उसे कई वारदान दिए, लेकिन भगवान ब्रह्मा ने महिषासुर को अमर होने के वरदान की जगह यह वारदान दिया कि उसकी मृत्यु एक स्त्री के हाथों होगी। ब्रह्मा जी से यह वारदात पाकर महिषासुर काफी खुश हो गया और सोचने लगा कि किसी भी स्त्री में इतनी ताकत नहीं है कि उसके प्राण ले सकें।

इसी विश्वास के साथ महिषासुर ने अपनी आसुरी सेना के साथ देवों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, जिसमे देवों की हार हो गई और देवगण मदद के लिए त्रिदेव भगवान शिव, ब्रह्मा और विष्णु के पास पहुंचे। तीनों देवताओं ने अपनि शक्ति से देवी दुर्गा को जन्म दिया, जिसके बाद दुर्गा ने राक्षस महिषासुर से युद्ध कर उसका वध किया और इस तरह माँ दुर्गा की जीत हुई। इसके अलावा इस त्योहार को फसल से जोड़ कर भी देखा जाता है, जो दुर्गा माता के जीवन और सृजन रूप को भी चिन्हित करता है।

पंचमी या षष्टि वाले दिन पंडाल में स्थापित देवी दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, कार्तिक और भगवान गणेश की खूबसूरत मूर्तियाँ का अनावरण भक्तों के दर्शन के लिए किया जाता है। पूजा वाले दिन भक्त सुबह जल्द उठकर माँ दुर्गा की पुष्पांजली होने तक उपवास करते हैं, उसके बाद फल और मिठाई खाकर अपना व्रत तोड़ते है। दुर्गा पूजा के मौके पर ज्यादातर शहरों में एक लाइन

से कई पंडाल देखा जा सकते है और कई परिवार इन पंडाल में देवी दर्शन के लिए जाते है। दोपहर के समय देवी को पारंपरिक भोग जिसमें खीचड़ी, पापड़, मिलीजुली तरकारी, टमाटर की चटनी, बेगुन भाजा के साथ रसगुल्ला भोग लगाया जाता है। अष्टमी को पूजा का सबसे महत्वपूर्ण दिन माना जाता है, इस दिन भोग में कुछ विशेष चीजें शामिल की जाती है, जिसमें खिचड़ी की जगह चावल,चना दाल, पनीर की सब्जी, मिलीजुली तरकारी, बेगम भाजा, टमाटर की चटनी, पापड़, राजभोग और पायश भोग में चढ़ाया जाता है।

दुर्गा पूजा की खास10 बातें है, 10 दिनों तक चलने वाले इस त्योहार को माँ की आराधना के साथ साथ ही ये 10 चीजें भी खास बनाती है।

1. पंडाल
2. भोग
3. घुनुची नृत्य
4. गरबा/डांडिया
5. ढ़ाक
6. लाल पाढ़ की साड़ी
7. पुष्पांजलि
8. सिंदूर खेल
9. विसर्जन
10. रावण वध

दुर्गा माँ हिन्दू धर्म की देवी है। इनको आदिशक्ति के नाम से भी जाना जाताहै। इनके 9 अन्य रूप है, जिनकी पूजा नवरात्रि में की जाती है।

सोनाली सेठी, +3 तृतीय वर्ष

साहित्य और सिनेमा

साहित्यकार समाज से जुड़ा होता है इसिलिये उनके साहित्य में समाज का यथार्थ चित्रण होता है। साहित्यकार समाज के यथार्थ को गद्य या पद्य के रूप में संकलित करता है और सिनेमा इसी साहित्य को चित्र के माध्यम से समाज के सामने दिखाने का प्रयास करता है। साहित्यकार साहित्य को समाज का निर्माता मानते हैं। साहित्य और सिनेमा का बहुत ही बेजोड़ संबंध है क्योंकि बिना साहित्य के ना तो अच्छे समाज औए ना ही सिनेमा की कल्पना की जा सकती है। साहित्य सिनेमा के लिए एक प्रकार का कच्चा माल तैयार करता है सिनेमा वही दिखता है जो समाज में घटता है और साहित्यकार भी समाज पर ही कलम चलाता है। अतः इसीलिये महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा है- "साहित्य समाज का दर्पण है"।

समाज सिनेमा को लेकर भले ना चले लेकिन सिनेमा समाज को ही लेकर अपनी यात्रा शुरू करते हुए यहाँ तक पहुंचा है। कुछ लोगों का इसके विपरीत मानना है कि सिनेमा का समाज से कुछ लेना देना नहीं है। इन लोगों के अनुसार यह सत्य है कि सिनेमा सदा से मात्र एक प्रकार से मनोरंजन का साधन रहा है, जिसे दर्शक अपनी रोजमर्रा की समस्याओं से थोड़ी देर के लिए ही सही परंतु मुक्ति पाने के लिए देखता है।

राष्ट्र भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। दक्षिण में भले ही हिंदी का विरोध हो परंतु हिंदी फिल्मों के गीत सर्वत्र गाये जाते हैं। मद्रास में बनने वाली फिल्मों में सर्वाधिक संख्या हिंदी फिल्मों की है। हिंदी के प्रति आस्थाभाव जागृत करने में फिल्में ही सशक्त सिद्ध हुई। मोहन राकेश की 'आषाढ़ का एक दिन', मन्नू भंडारी की 'आपका बंटी' जैसे कई नाम है जिनकी कृतियों पर सार्थक फ़िल्म बनी है।

भारत में फिल्मों की विकास यात्रा देखे तो इसका पहला युग सन 1896 से 1930 तक है। यह मूक सिनेमा का समय है। छोटी-छोटी आकस्मिक गतिविधियों को छोड़ दे तो मूक फिल्मों के निर्माता दादा

साहब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है। इन्होंने पहली मूक फिल्म ‘हरिश्चन्द्र’ बनायी। 1931 में जब बोलती फिल्में ईरानी की 'आलम आरा' तेलगु में 'भक्त प्रहलाद' तथा तमिल में 'कालिदास' बनी तो फिल्मों का दूसरा उत्थान शुरू हुआ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारतीय हिंदी सिनेमा में काले धन का निवेश होने लगा जिसके परिणाम स्वरूप नए-नए निर्माताओं का आना शुरू हुआ। इन नव निर्माताओं के आने से पिछले दो दशकों से चल रही फिल्म कंपनियों और स्टूडियो में बहुत बंद होने लगे और कुछ अपने-अपने स्टूडियों को इन नये निर्माताओं को किराए पर देना शुरू कर दिया। फिल्मों का बजट बढ़ता गया और महंगे-महंगे आलीशान सेट्स से सजी-सँवरी फिल्मों का निर्माण होने लगा।

सन 1941 में हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भगवती चरण वर्मा के उपन्यास पर आधारित केदार शर्मा के गीत संगीत से भरी फिल्म 'चित्रलेखा' बनी थी, जिसकी प्रस्तुति में धन का अच्छा खासा व्यय किया गया था।

सिनेमा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशील एवं सशक्त माध्यम है, सिनेमा मात्र मनोरंजन का साधना नहीं है अपितु वह अतीत का अभिलेख, वर्तमान की चेतना और भविष्य की कल्पना है। राष्ट्रीय एकता, अछूतोद्धार, नारी जागरण, अन्याय, शोषण, भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद जैसे राष्ट्रीय हित के प्रश्नों पर जन-जन को जागृत करने वाला माध्यम सिनेमा ही है।

चालीस का दशक एक ओर जहाँ सामाजिक और राष्ट्रीय परिवेश में परिवर्तन का दशक रहा है वही भारतीय हिंदी सिनेमा की शैली विषय-वस्तु और प्रस्तुति पर भी यह परिवर्तन साफ-साफ दिखाई देता है। हिंदी सिनेमा पहले की अपेक्षा अधिक रूमानी होता चला गया है। रूमानी सिनेमा में प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए गीतों का सहारा तो पहले से ही चला आ रहा था, लेकिन चालीस के दशक की फिल्मों में गीत अधिक सुरीले और अत्यधिक लोकप्रिय हए। अतः निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि यह दशक गीत संगीत से भरे मनोरंजक फिल्मों की एक अलग शैली की शुरुआत का दशक रहा है। इस बात का प्रणाम यह है कि उस दशक के कई लोकप्रिय गीतों को लोग आज भी नए अंदाज में भारतीय और पश्चिमी संगीत में फैशन के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं जो युवा वर्ग को खूब आकर्षित कर रहा है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सिनेमा का जन्म साहित्य से ही हुआ है। आज जिस प्रकार साहित्य में बदलाव होता नजर आ रहा है उसी तरह सिनेमा में भी बदलाव नजर आते हैं। साहित्य वर्तमान समय में व्यक्तित्व के मूल्यों को बनाए रखने में कहीं न कहीं कुछ न कुछ संभव है लेकिन वही सिनेमा समाज के व्यक्तित्व मूल्यों में बहुत गिरावट आई है।

लिज़ा मिश्रा, +3 तृतीय वर्ष

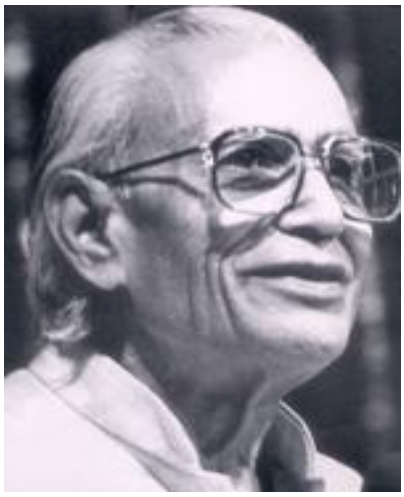

धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में हुआ। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी था। स्कूली शिक्षा डी. ए वी हाई स्कूल में हुई और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम ए करने के बाद डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध-प्रबंध लिखकर उन्होंने पी-एच॰डी॰ प्राप्त की।

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे : अध्ययन और यात्रा। भारती के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा-अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है:

जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज़ जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूँ। (ठेले पर हिमालय)

उन्हें आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली भी प्रभावित करती है
और रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत। प्रसाद और शरत्चन्द्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थे परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। 'सिद्ध साहित्य' उनके शोध' का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। पश्चिमी साहित्यकारों में शीले और आस्करवाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे। भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुरमात्रा में मिलते हैं।

आलोचकों में भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ-साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकीयों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों-उपन्यासों में

मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के चित्रा हैं 'अंधा युग' में स्वातंत्रयोत्तर भारत में आई मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवन-शैली और मानसिकता के संतुलन पर है, वे न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन, परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाना होगा-

पश्चिम का अंधानुकरण करने की कोई जरूरत नहीं है, पर पश्चिम के विरोध के नाम पर मध्यकाल में तिरस्कृत मूल्यों को भी अपनाने की जरूरत नहीं है।

उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुःख दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है। दुःख तो उन्हें इस बात का है कि आज 'जनतंत्र' में 'तंत्र' शक्तिशाली लोगों के हाथों में चला गया है और 'जन' की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी 'जन' की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उन्होंने किया है।

कार्यक्षेत्र

अध्यापन। १९४८ में 'संगम' सम्पादक श्री इलाचंद्र जोशी में सहकारी संपादक नियुक्त हुए। दो वर्ष वहाँ काम करने के बाद हिन्दुस्तानी अकादमी में अध्यापक नियुक्त हुए। सन् १९६० तक कार्य किया। प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान 'हिंदी साहित्य कोश' के सम्पादन में सहयोग दिया। निकष' पत्रिका निकाली तथा 'आलोचना' का सम्पादन भी किया। उसके बाद 'धर्मयुग' में प्रधान सम्पादक पद पर बम्बई आ गये।

१९८७ में डॉ॰ भारती ने अवकाश ग्रहण किया। १९९९ में युवा कहानीकार उदय प्रकाश के निर्देशन में साहित्य अकादमी दिल्ली के लिए डॉ॰ भारती पर एक वृत्त चित्र का निर्माण भी हुआ है।

प्रमुख रचनायें

- **कहानी संग्रह** : मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से, समस्त कहानियाँ एक साथ
- **काव्य रचनाएं** : ठंडा लोहा, सात गीत, वर्ष कनुप्रिया, सपना अभी भी, आद्यन्त
- **उपन्यास**: गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन
- **निबंध** : ठेले पर हिमालय, पश्यंती
- **कहानियाँ** : अनकही, नदी प्यासी थी, नील झील, मानव मूल्य और साहित्य, ठण्डा लोहा,
- **पद्य नाटक** : अंधा युग
- **आलोचना** : प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य

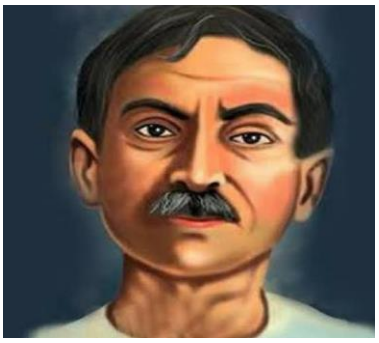

प्रेमचंद के उपन्यासों में तत्कालीन समाज

उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद का हिंदी में प्रवेश सेवासदन के साथ हुआ था। पहला उपन्यास उन्होंने धनपत राय के नाम से, दूसरा नबाब राय के नाम और फिर "प्रेमचंद" के नाम से लिखा था।

प्रेमचंद विचारों से आर्य समाज के अनुगामी थे और हिंदु समाज को आधुनिकता और तर्क का संगम रूप देना चाहते थे। वे उन सारी बातों के विरोधी थे जो मनुष्य मनुष्य के बीच, स्त्री पुरुष के बीच, अमीर गरीब के बीच, जमीदारों किसानों के बीच, यहाँ तक की भगवान और आदमी के बीच भी फाँक पैदा करती हैं।

अपने प्रथम उपन्यास सेवासदन में प्रेमचंद ने वेश्या जीवन से संबंधित समस्याओं के चित्रण का प्रयास किया। सेवासदन में स्त्रियों के वेश्यावृत्ति अपनाने के मूल में तिलक दहेज की प्रथा, पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा और असहनुभूती के कारण माना गया है। हिन्दी साहित्य में वेश्यावृत्ति को हिन्दु समाज में स्त्रियों की हीन दशा के परिणाम के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा थी। प्रेमचंद की भी यही धारणा थी, पर उन्होंने सामाजिक आर्थिक कारणों के साथ साथ मनोविज्ञान कारण को भी जोड़कर उसे अधिक विश्वसनीय बना दिया।

सेवासदन में प्रेमचंद ने पहली बार पति से विद्रोह करने वाली और प्रतिक्रिया में वेश्यावृत्ति अपना लेने वाली स्त्री के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। सामाजिक मजबूरियों सुमन को वेश्या बनाती है। उसके वेश्या बन जाने पर समाज का प्रबुद्ध वर्ग विशेष कर आर्य समाज सक्रिय होता है। उसका पति भी पश्चाताप करता है। यह प्रेमचंद की क्रांतिकारी सामाजिक दृष्टि का परिचय है। पति घर और समाज से सुमन का विद्रोह शोषित और दलित नारी का, पुरूष समाज से विद्रोह का प्रतीक है।

दहेज प्रथा के विरोध का स्वर प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में भी दिखाई पड़ता है, पर सेवासदन में इतने मार्मिक रूप से पहली बार चित्रण किया गया है। प्रेमाश्रम में प्रेमचंद ने ब्रिटिश औपनिवेशिक के अन्तर्गत किसानों और जमीदारों के सम्बन्धों का चित्रण किया है। इस काल की सबसे तीखी सच्चाई यही थी कि भारत एक विदेशी पूंजीवादी ताकत का उपनिवेश था जिसका एक मात्र लक्ष्य देश का आर्थिक शोषण करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ब्रिटिश सरकार को किसी भी हद तक मानवीय मूल्यों और अधिकारों की उपेक्षा तथा दमन और अत्याचार के किसी भी माध्यम का उपयोग करने में कोई हिचक न थी। ब्रिटिश शासन ने प्रशासन तन्त्र, जमींदार वर्ग और साहुकार-महाजन समुदाय को अपना सहायक बना रखा था।

ब्रिटिश शासन के शोषण-नीति से पैदा हुई किसानों की निर्धनता, उनका दयनीय जीवन, स्तिथि तथा अमानवीय परिस्तिथियों का चित्रण वे प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों

में करते है। जमींदार केवल अपने कमीशन से संतोष नहीं करते थे वरन् बेगारी, चंदा, शगुन आदि के रूप में अतिरिक्त भूमिकर वसूलते थे और सरकार उनपर कोई अंकुश नहीं लगाती थी।

प्रेमचंद ने प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि और गोदान में इस शोषण का अत्यन्त यथार्थ, सजीव और रोमांचकारी अंकन किया है।

कर्मभूमि में अछूतों के मंदिर-प्रवेश और निम्न वर्ग के लोगों के आवास की समस्या को तत्कालीन जन आन्दोलन के चित्रण का वर्णन है। अपने अन्तिम उपन्यास गोदान में प्रेमचंद ने यह भी अनुभव किया है कि जब तक किसान संगठित नहीं होंगे तब तक वे सरकारी शोषण और दमन का प्रतिरोध नहीं कर सकेंगे।

प्रेमचंद ने सेवासदन में ही मध्य वर्ग के जीवन को अपने कथ्य में शामिल करना आरंभ कर दिया था और रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन आदि में इसको पर्याप्त विस्तार और गहराई के साथ अंकन किया। सेवासदन के कृष्ण चंद्र और पद्म सिंह शर्मा, रंगभूमि के ताहिर अली, निर्मला के उदयभानु लाल और मुंशी तोता राम, गबन के मुंशी दयानाथ और इन्दु भूषण आदि की समस्याएँ मध्यवर्गीय अंतर्विरोध की ही समस्याएँ हैं।

प्रेमचंद के समय में भी नारी, विशेषकर मध्य और उच्च वर्ग की नारी, दोहरी दासता की शिकार थी। उसे पारिवारिक संपत्ति में कोई हक नहीं था। और न वह स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका अर्जित करने में समर्थ थी। प्रायः लड़कियाँ शिक्षा से वंचित थी। माता पिता अपनी कन्याओं का विवाह, तिलक दहेज देने में असमर्थ होने के कारण वृद्ध व्यक्तियों से विवाह करवा देते थे और लड़कियों की ज़िन्दगी नरक बन जाती थी। सेवासदन और निर्मला में प्रेमचंद ने इस यथार्थ का अंकन मार्मिक रूप में किया है। गबन में पति की मृत्यु के बाद रतन की दुर्दशा तत्कालीन समाज में विधवा की असहाय स्तिथि का रोमांचकारी उदाहरण है। सेवासदन की शांता, प्रेमाश्रम की श्रद्धा और विद्या, रंगभूमि की इंदु, कर्मभूमी की नैना आदि प्रेमचंद के नारी आदर्श की प्रतिमा मात्र है। गबन की जालपा, कर्मभूमी की सुखदा जैसी सतेज और विद्रोहिणी स्त्रियाँ भी अंततः परम्परा आदर्श की शिकार हो जाती है।

स्वाधीनता आन्दोलन का प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों के नारी पात्रों पर भी दिखाई देता है। गबन के जालपा के चरित्र का उत्तरार्ध इस नारी जागरण का संकेत देता है। कर्मभूमि की सुखदा हरिजनों के मंदिर प्रवेश आन्दोलन का नेतृत्व करती है और जेल जाती है। प्रेमचंद के समय का एक दूसरा यथार्थ दलितों की सामाजिक स्थिति से सम्बंध था। कर्मभूमि में सुखदा और शान्तिकुमार के नेतृत्व में हरिजनों के मन्दिर प्रवेश का आन्दोलन सफल होता है।

प्रेमचंद ने अधिक से अधिक अपने उपन्यासों में ब्रिटिश शाशन के द्वारा होने वाले अधिक शोषण, देशोन्नति, शिक्षा के प्रसार, उद्योग धंधों और कृषि की विकाश, सामाजिक सुधार, स्त्रियों की स्तिथि में बदलाव आदि की बातें ही करते। जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण और दमन, पुलिस विभाग की रिश्वतखोरी और अत्याचार, सरकारी अमलों में फैले भ्रष्टाचार आदि का चित्रण किया है। इस तरह प्रेमचंद के सभी उपन्यासों में तत्कालीन समाज अपनी समग्रता में स्थान पाता है।

सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष

बरगद

दरवाजे से बाहर देखते ही पायल की नज़र अचानक उस बरगद के पेड़ पर पड़ी जो अब सूख चुका था। उस पेड़ को देखते ही पायल के सामने उसके अतीत की घटनाएँ ताज़ा हो उठी।

जब पायल अपनी माता की गर्भ में थी तो अचानक ये पेड़ उनके घर के सामने उग आया था। जिसको देख सभी लोग खुश हो गए, और दादी ने ये तक कह डाला "लक्ष्मी आने वाली है।" उनकी यह बात सच साबित हुई, और इस तरह पायल का इस संसार में आगमन हुआ।

बचपन से ही पायल का इस पेड़ के प्रति लगाव हो गया था। इसका कदाचित यह भी कारण था कि पायल जब गर्भ में थी तो उसकी माँ अधिकांश समय इस पेड़ के नीचे ही बिताती थी। पायाल बचपन से ही अपने से भी ज्यादा इस पेड़ का ख्याल रखती थी। कभी पानी डालना नहीं भूलती थी। उसके कारण ही यह पेड़ खिला खिला रहता था। घर में भी एक प्रकार की अद्भुत शांति रहती थी ।

अपने पिता माता की इकलौती संतान पायल अपने छोटे सी दुनिया में खुश रहती थी। समय बदलता गया। छोटी पायल अब धीरे धीरे बड़ी होती जा रही थी साथ ही बड़ा हो रहा था ये बरगद का पेड़ भी। लेकिन फिर भी उसने इस पेड़ का ख्याल रखना नहीं छोड़ा। उसके जीवन में सब कुछ अच्छा चल रहा था।

पढ़ाई पूरी होने के बाद उसने अपनी मेहनत से एक सरकारी नौकरी कर ली। माता पिता की इकलौती संतान होने के कारण उसे अपनी मनमानी करने की आज़ादी थी। लेकिन पायल ऐसी लड़की नहीं थी, वो हमेशा अपने आदशों का ध्यान रखती थी। नौकरी के बाद उसके माता पिता ने उसे विवाह करने का प्रस्ताव दिया। लेकिन अपनी माता पिता की हर बात मानने वाली पायल उनके इस बात से इनकार कर देती है। क्योंकि उसके हिसाब से विवाह का मतलब अपनी माता पिता से दूर हो जाना था, जो कि उसे बिल्कुल मंजूर न था। उनसे दूर रह कर वो उनकी देखभाल कैसे कर सकती थी। अतः पायल ने पहली बार अपने लिए कोई बड़ा निर्णय लिया था कि वह विवाह नहीं करेगी। उसके बड़ों ने उसे समझाने का बहुत प्रयास किया लेकिन उसने किसी की बात को नहीं मानी ।

इसके बाद वह अपने कर्ममय जीवन में इतनी व्यस्त हो गई कि उसे किसी और चीज़ का ध्यान नहीं रहा। ना अपने परिवार का और ना ही उस पेड़ का। उसे कभी अपने एकाकीपन का एहसास भी

नहीं हुआ। इसी बीच उसके पिता का देहांत हो जाता है। पायल टूट जाती है पर हार नहीं मानती। पिता के जाने के बाद वह अपनी माँ को अपना सबकुछ मानकर फिर कुछ दिन बाद स्वाभाविक हो जाती है, और अपनी कर्ममय जीवन में व्यस्त हो जाती है।

पायल की उम्र अब 45 साल है और अब वो उम्र के उस पड़ाव पर आ खड़ी है जहाँ उसके सर से माता का साया भी हटने जा रहा है। उसकी माँ अब आखरी साँसें गिन रही है, पायल जैसे अब बेसहारा हो गयी। वो अपनी माँ की इस हालत को देख नहीं पाती। वह अपनी माँ से दूर दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है। माँ के पास अब सब रिश्तेदार बैठे हैं। दरवाजे के पास आ कर उसकी नज़र उस बरगद के पेड़ पर पड़ती है, जो अब सूख चुका है। उसकी अपनी लापरवाही के कारण वह पेड़ भी उससे दूर चला जाता है। वो सोचती है कि " मैंने इसे एकाकी छोड़ने के कारण ये मुझसे दूर चला गया जैसे अपने परिवार को छोड़ने के कारण वो मुझसे दूर चला जा रहा है। मैंने क्या इसी कारण विवाह न करना का निर्णय लिया था... अब न कोई अपना है और न कोई साथी जिसके साथ मैं अपना बाकी जीवन बिता सकूं..." इन्हीं सब विचारों में पायल डूबी हुई थी कि एक महिला आकर उसे सूचना देती है कि "आपकी माँ अब इस दुनिया में नहीं रही।"

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

मनुष्य का आभूषण सज्जनता

जिस प्रकार गहने शरीर को सजाने, उसकी बाहरी सुन्दरता को बढ़ाने का काम करते हैं। ठीक उसी प्रकार आन्तरिक सुन्दरता के लिए मानव के पास एक अन्य स्वाभाविक और जन्मजात गहना भी होता है, जो उसके बिना किसी छल का सहारा लिए, अपने - आप प्राप्त हो जाता है । मनुष्य चाहे तो उसे बढ़ाकर, नित नए रूप में उसका प्रयोग करके उसका असीमित विस्तार कर सकता है। उसे अपने गले का हार बना सकता है। उसके कारण खुद भी सबके गले का हार बन सकता है।

लेकिन बिना मूल्य मिलने वाले अपने इस आभूषण को अक्सर मनुष्य पहचान नहीं पाता। यदि पहचान भी लेता है तो अक्सर छोटे से स्वार्थ के लिए उसे उठाकर फेंक देने में तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करता। तनिक - सी देरी किये बिना इस अमूल्य आभूषण को उतार कर फेंक देता है और फिर कहीं का नहीं रह जाता। जन्मजात प्राप्त होने वाले इस गहने का नाम सभी जानते हैं और वह है,,, “सज्जनता” यानि “सत् मनुष्य” होना ।

यानि जो सच्चा और श्रेष्ठजन है, वही सज्जन है। मनुष्य के प्रति सच्ची मनुष्यता को ही सबसे बढ़कर श्रेष्ठ मानने वाला व्यक्ति सज्जन है। सज्जन वह तभी है जब तक उसके पास सज्जनता है, अर्थात

जिस प्रकार आभूषण एवं सुन्दर वस्त्र पहनाये जाने पर आदमी के शरीर की सुन्दरता बढ़ जाती हैं, उसी प्रकार अच्छे गुण और व्यवहार मनुष्य के मन की ज्योति बढ़ाकर उसकी मनुष्यता की भावना में निखार ला देते हैं। इससे उसे जो लोकप्रियता, मान एवं यश प्राप्त हुआ करता है, वास्तव में वही सज्जनता रूपी भूषण से बढ़ने वाली शोभा है ।

रहीम दास जी ने कहा है:

जो रहिम उत्तम प्रकृति का, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नाहिं, लिपटे रहत भुजंग।

अर्थात उत्तम प्रकृति वालों का कुसंगति उसी प्रकार कुछ नहीं बिगाड़ सकती, जैसे चन्दन वृक्ष से लिपटे रहकर भी जहरीले नाग उसकी सुगन्ध और शीतल प्रकृति को प्रभावित कर बदल नहीं पाते। हर हाल में एक सा बने रहना यानि अच्छे और मानवीय भाव से युक्त बने रहना ही वास्तव में सज्जनता है ।

आमतौर पर कहा जाता है कि जैसी संगति बैठिए, वैसा ही फल मिलता अर्थात संगति का प्रभाव आदमी पर अवश्य पड़ता है। लेकिन स्वभाव से सज्जन व्यक्ति और उसकी सज्जनता के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

सज्जनता हमेशा सागर के समान मोती भरे गहरे हृदय वाला, धरती के समान अच्छा-बुरा सब कुछ सह कर भी बदले में अच्छा ही देने वाला, विशाल विस्तृत हिमालय के समान शांत, स्थिर और उच्च भावों से भरा हुआ होता है ।

वह चन्दन के समान विष की जलन को शांत, शीतल करने वाला होता है। जहरीले साँप सा मनुष्यता के लिए हानिकारक कभी भूलकर भी नहीं बन सकता है। हरेक के काम आने, नम्र होने, नि:स्वार्थ और निस्पंद यानी लालच-लालसा से रहित होने का नाम “सज्जनता” है । हमेशा सबके काम आने के लिए तैयार रहने का नाम सज्जनता है।

सबके सुख - दु:ख को अपना समझने का नाम सज्जनता है। सभी के दु:खते घावों के लिए मरहम का फाहा बन जाने का नाम सज्जनता है। ऐसी प्रकृति यानि स्वभाव ही सज्जनता है जो मानवता का भूषण हुआ करती है। यदि धरती पर मानवता टिकी हुई है, इसका अर्थ है कि सज्जनता जीवित है और हमेशा जीवित रहकर मानवता को विभूषित करती रहेगी।

सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष

गौरा पंत 'शिवानी'

गौरा पंत 'शिवानी' (जन्म- 17 अक्टूबर, 1923 ; मृत्यु- 21 मार्च, 2003) हिन्दी की सुप्रसिद्ध उपन्यासकार थीं। हिंदी साहित्य जगत में शिवानी एक ऐसी शख्सियत रहीं, जिनकी हिंदी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू तथा अंग्रेज़ी पर अच्छी पकड़ थी और जो अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमायूँ क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक दिखलाने और किरदारों के बेमिसाल चरित्र चित्रण करने के लिए जानी गई। महज 12 वर्ष की उम्र में पहली कहानी प्रकाशित होने से लेकर उनके निधन तक उनका लेखन निरंतर जारी रहा। उनकी अधिकतर कहानियां और उपन्यास नारी प्रधान रहे। इसमें उन्होंने नायिका के सौंदर्य और उसके चरित्र का वर्णन बड़े दिलचस्प अंदाज में किया।

जीवन परिचय

शिवानी आधुनिक अग्रगामी विचारों की समर्थक थीं। शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर, 1923 को विजयादशमी के दिन गुजरात के पास राजकोट शहर में हुआ था। शिवानी के पिता श्री अश्विनीकुमार पाण्डे राजकोट में स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिंसिपल थे, जो कालांतर में माणबदर और रामपुर की रियासतों में दीवान भी रहे। शिवानी के माता और पिता दोनों ही विद्वान संगीत प्रेमी और कई भाषाओं के ज्ञाता थे। शिवानी ने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन से बी.ए. किया। साहित्य और संगीत के प्रति एक गहरा रुझान 'शिवानी' को अपने माता और पिता से ही मिला। शिवानी के पितामह संस्कृतके प्रकांड विद्वान पंडित हरिराम पाण्डे, जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मोपदेशक थे, वह परम्परानिष्ठ और कट्टर सनातनी थे। महामना मदनमोहन मालवीय से उनकी गहरी मित्रता थी। वे प्रायः अल्मोड़ा तथा बनारस में रहते थे, अतः शिवानी का बचपन अपनी बड़ी बहन तथा भाई के साथ दादाजी की छत्रछाया में उक्त स्थानों पर बीता। शिवानी की किशोरावस्था शान्तिनिकेतन में और युवावस्था अपने शिक्षाविद पति के साथ उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में बीती। शिवानी के पति के असामयिक निधन के बाद वे लम्बे समय तक लखनऊ में रहीं और अन्तिम समय में दिल्ली में अपनी बेटियों तथा अमेरिका में बसे पुत्र के परिवार के साथ रहीं

प्रमुख रचनाएँ

उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा। उनके लखनऊ स्थित आवास-66, गुलिस्ताँ कालोनी के द्वार, लेखकों, कलाकारों, साहित्य-प्रेमियों के साथ समाज के हर वर्ग जुड़े उनके पाठकों के लिए सदैव खुले रहे। शिवानी की 'आमादेर शांति निकेतन' और 'स्मृति कलश' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई श्रेष्ठ पुस्तकें हैं। 'कृष्णकली' उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके दस से भी अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा।

शिवानी की रचनाएँ

उपन्यास

- कृष्णकली
- कालिंदी
- अतिथि
- पूतों वाली
- चल खुसरों घर आपने
- श्मशान चंपा
- मायापुरी
- कैंजा
- गेंदा
- भैरवी
- स्वयंसिद्धा
- विषकन्या
- रति विलाप
- आकाश

यात्रा विवरण

- चरैवैति
- यात्रिक

कहानी संग्रह

- शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ
- शिवानी की मशहूर कहानियाँ
- झरोखा, मृण्माला की हँसी

संस्मरण

- अमादेर शांति निकेतन
- समृति कलश
- वातायन
- जालक

धारावाहिक

- 'सुरंगमा'
- 'रतिविलाप',
- 'मेरा बेटा'
- 'तीसरा बेटा'

आत्मकथ्य

- सुनहुँ तात यह अमर कहानी

छोटी चीज में बड़ी बात

एक बालक ने अपनी माँ को कुछ लिखते देखा, तो बोला - माँ, आप पेंसिल से क्यों लिख रही हैं? माँ बोली बेटा, मुझे पेंसिल से लिखना अच्छा लगता है। इसमें कई गुण है। बालक चौंका और बोला, दिखने में तो यह और पेंसिल जैसी ही है। लिखने के अलावा इसमें और कौनस गुण है?
माँ बोली - यह जीवन से जुड़े कई अहम सिख हमें देती है। इसके पांच गुण तुम अपना लो, तो इस संसार में शांतिपूर्वक रह सकेगे।

पहला गुण - तुम्हारे भीतर बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल करने की योगयता है। लेकिन तुम्हें सही दिशा में निर्देश चाहिए।
दुसरा गुण - लिखते - लिखते बीच में रूकना पड़ता है। पेंसिल की नोक को पैना करना पड़ता है। इससे इसे कष्ट होता है लेकिन यह अच्छा लिख पाती है। इसलिए अपने दुःख हार को धैर्य से सहन करो।
तीसरा गुण - पेंसिल गलतियाँ सुधारने के लिए रबर के प्रयोग की इजाजत देती है। इसलिए कोई गलती हो तो उसे सुधार लो।
चौथा गुण - पेंसिल में महत्व बाहरी लकड़ी का नहीं अंदर के ग्राफाइट का है इसलिए अपने बाहरी रूप से ज्यादा अपने अंदर चल रहे विचारों पर गौर करों।
पांचवा गुण - पेंसिल हमेशा निशान छोड़ जाती है। आप सब भी अपने अच्छे कामों से निशान छोड़ो।
इस प्रकार छोटी - छोटी चीजों से भी बड़ी चीज समझी जा सकती है और अपने जीवन को परिवर्तित किया जा सकता है।

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधु - महात्माओं को बैठे देखा| वह उन्हें पहचान नहीं पायी|

उसने कहा, "मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है?"

"हमें भोजन करना है|" साधुओं ने बोला |

"ठीक है! कृपया मेरे घर में पधारिये और भोजन ग्रहण किजीये|"

"क्या तुम्हारा पति घर में है?" एक साधु ने प्रश्न किया |

नहीं , वह कुछ देर के लिए बाहार गए हैं |" औरत ने उत्तर दिया|

“तब हम अन्दर नहिं आ सकते”, तीनों साधु एक साथ बोले

थोड़ी देर में पति घर वापस आ गया, उसे साधुओं के बारे में पता चला तो उसने तुरंत अपनी पत्नी से उन्हें पुनः आमंत्रित करने के लिये कहा| औरत ने ऐसा ही किया, वह साधुओं के समक्ष गयी और बोली, "जी अब मेरे पति वापस आ गए है, कृपया आप लोग घर में प्रवेश करिए|"

" हम किसी घर में एक साथ प्रवेश नहिं करते|" साधुओं ने स्त्री को बताया |

" ऐसा क्यों?" औरत ने अचरज से पुछा |

जवाब में मध्य में खडे साधु ने बोला, "पुत्री मेरी दायीं तरफ खडे साधु का नाम 'धन' और बायीं तरफ खडे साधु का नाम 'सफलता' है और मेरा नाम ‘प्रेम’ है| अब जाओ और अपने पति से विचार - विमर्श करके बताओ की तुम हम तीनों में से किसे बुलाना चाहते हो|

औरत अन्दर गयी और पति को सारी बात बताई|

पति बेहद खुश हो गया| "वह आनंदित हो गया और बोला चलो जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं, उसके आने से हमारा घर धन - दौलत से भर जाएगा, और फिर कभी पैसों की कमी नहीं होगी |"

औरत बोली ; "क्यों न हम ' सफलता ' को बुला लें, उसके आने से हम जो करेंगें वह सही होगा , और हम देखते देखते धन - दौलत के मालिक भी बन जायेंगें|"

ह्म्म तुम्हारी बात भी सही है, पर इसमें मेहनत करनी पडेगी, मुझे तो लगता है 'धन' को बुला लेते हैं|" पति बोला

थोड़ी देर उनकी बहस चलती रही पर वो किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाए और अंततः निश्चय किया कि वह साधुओं से यह कहेंगें कि 'धन' और 'सफलता' में जो आना चाहे आ जाये|

औरत झट से बाहार गयी और उसने यह आग्रह साधुओं के सामने दोहरा दिया|

उसकी बात सुन कर साधुओं ने एक दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे घर से दूर जाने लगे|

"अरे ! आप लोग इस तरह वापस क्यों जा रहे हैं?" औरत ने उन्हें रोकते हुए पुछा |
पुत्री दरअसल हम तीनों साधु इसी तरह द्वार - द्वार जाते है और घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर 'धन' या 'सफलता' को बुलाता है हम वहां से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहाँ बारी - बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं| इसलिए इतना याद रखना कि जहाँ प्रेम है वहाँ धन और सफलता की कमी नहीं होती|" ऐसे कहते हुए धन और सफलता नामक साधुओं ने अपनी बात पूर्ण की |"

न मैं हूं महान, न तुम हो महान

छिडी हुई है हाथ की उंगलियों में लड़ाई
चारों कर रही हैं, अपनी महत्वता की अनुवाई

मध्यमा बोली, मैं हूँ महान
कद में हूं ऊंची, तुम करो सम्मान
हो तुम मेरे पहरेदार
मेरी रक्षा, तुम्हारा है काम |

कनिष्ठा बोली, जरा करो नमस्कार
मेरे पीछे, दिखते हो तुम चार
कद में चाहे, मैं छोटी हूं
लेकिन, प्रथम में आती हूं|

कनिष्ठा पर हंसती, अनामिका
बोली मैं हूं, सौन्दर्य की मल्लिका
मुझपे चढ़ता अंगुठी का ताज
रिश्तों को मिलता, मुझसे नाम |

नाम के तर्क पर, तर्जनी बोली
मुझसे उपयोगी, तुम में से कोई नहिं
मैं दर्शाती, मैं दिखाती, आदेश देना है मेरा काम
इसलिए मैं हूँ, सब में महान

चुपचाप अलग किनारे बैठा
अंगुठा ने किया सवाल
क्या कभी तुम सभी ने सोचा
मेरे बिना, क्या कोई काम होता?
न उठा पाते कोई वजन,
ना ही कोई काम होता आसान

खिसिया के अंगुठे से बोली उंगलियां
क्या तुम्हें लगता है तुम हो महान?

अंगुठा बोला
न मैं हूँ महान, न तुम हो महान
हमारा साथ ही है, हमारा अभिमान
जो ना होता हम से कोई पांच
तो नहिं बन पाता, यह सुंदर हाथ

हाफिज़ा, +3 द्वितीय वर्ष

शिक्षक

शिक्षकआज वसुधा की पावन घड़ी का,
मान बढ़ाते हैं शिक्षक
वैदिक काल से चली ज्ञान का भान कराते हैं शिक्षक।
क, ख, ग से A to Z का ज्ञान कराते शिक्षक
अपनी शिक्षा के द्वारा एक अच्छा इन्सान बनाते हैं शिक्षक,
बाल्यकाल से जीवन पर्यन्त तक
साथ निभाते शिक्षक है
जीवन पथ पर सही गलत का राह दिखाते शिक्षक
हर कठिनाई में राह दिये, हर मुश्किल में खड़े शिक्षक
शिक्षक की महिमा हैं अनन्त,
ईश्वर से भी बड़े ये शिक्षक है,
शिक्षक के शिक्षण द्वारा
ये फूल खिलखिलाया है
ऐसे शिक्षक को शतशत नमन
शत शत नमन !

सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष

बेटी

जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।

जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार - बार याद आती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

सपने

सपने होते हैं परछाई से,
जितने कदम चलो उतने बढ़ते जाते हैं
कभी खुशहाली, तो कभी जंग बन जाते हैं
छोटे से मन में, वो विशाल घर बनाते हैं
ज़िन्दगी की हकीकत में वो युद्ध छेड़ जाते हैं

सपने होते हैं परछाई से,
जितने कदम चलो उतने बढ़ते जाते हैं
नरमी सा एहसास, दिल में भर देते हैं
कभी हकीकत बन के, सामने आ जाते हैं
कभी किसी से नहीं डरते, वो भेद-भाव
चाहे किसी से नहीं करते हैं ,
चाहे राजा हो य भिखारी की आखें ,
सबकी आखों में आते हैं सपने

सपने होते हैं परछाई से,
जितने कदम चलो उतने बढ़ते जाते हैं
ऊँचाई इतनी कि, पल में चाँद और सूरज को छूलें
गहराई इतनी कि, समंदर की सतह में पल न लगे
गरीब को पल में, अमीर बनाएँ
महबूबा को पल में, प्रियतम से मिलाये

सपने हैं परछाई से,
जितने कदम चलो उतने बढ़ते जाते है|

मनीषा साहू, +3 द्वितीय वर्ष

आपकी बात

मैं लिज़ा मिश्रा, (+3 तृतीय वर्ष) की माँ हूँ। मुझे ऐसा लगता था कि 'आपकी बात' में अपनी प्रतिक्रिया देने की हक़ सिर्फ शिक्षक और शिक्षयित्री को हैं, लेकिन वेदुला मैडम जी की वजह से हमें भी ये अवसर मिला कि हम अपनी बात सबके सामने रख सकें, और इस बात की खुशी हुई कि 'आपकी बात' में हमें भी कुछ कहने को मौका मिला।

मैं हर किसीका लेख तो नहीं पढ़ पाती हूँ, पर जिन बच्चों का लेख पढ़ती हूँ मुझे बहुत अच्छा लगता है, सब अपने लेख मेहनत से तैयार करते हैं। अगस्त महीने की पत्रिका का cover page सोनाली ने बहुत सुंदर बनाया है। हिंदी विभाग के सारे बच्चे ऐसे ही मेहनत करें, जगन्नाथ जी से यही प्रार्थना करूँगी कि 'हिंदी भारती' का भविष्य खूब उज्जवल हो।

लीना मिश्रा

हम पिंकी सिंह, (+3 तृतीय वर्ष) के माता पिता हैं। ये वाकई बहुत खुशी की बात है कि हमारे बच्चे आगे बढ़ रहें हैं। वेदुला मैडम के बिना शायद ही मेरी बेटी कुछ लिख पाती या उसका लेख किसी मैगज़ीन में निकल पाता। वो बहुत खुश होती है जब आप और बाकी लोग उसकी कहानियों की तारीफ करते हैं। घर में आकर वो एक एक बात बताती है। उसकी बातें सुनकर, उसकी खुशी देख कर हम भी खुश हो जाते हैं। बस यही निवेदन है कि आपका आशिर्वाद हमारे बच्चों पर यूँ ही बना रहे। धन्यवाद मैडम

दीपक कुमार सिंह
रंजू सिंह

मैं सोनाली राउत, (+3 तृतीय वर्ष) का पिता हूँ। हिंदी भारती की 'आपकी बात' श्रृंखला में हमें शामिल करने हेतु बहुत बहुत धन्यवाद मैडम। हिंदी भारती की वजह से हमारे बच्चों को एक नई पहचान मिली है। बच्चों में इतनी काबिलियत है, हम इसका अंदाजा नहीं लगा सकते थे। ये बच्चे और मेहनत करें और आगे बढ़े, मेरा आशीर्वाद हमेशा बच्चों के साथ है।

धन्यवाद

अमूल्य कुमार राउत

नमस्ते, हम सोनिआ नायक, (+3 तृतीय वर्ष) के माता पिता हैं। हमें ई पत्रिका की जानकारी हमारी बेटी सोनिआ के द्वारा मिली। हम बहुत खुश हैं कि बच्चे कुछ नया करने की कोशिश कर रहें हैं। ई पत्रिका के माध्यम से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। धन्यवाद मैडम। आप के ही सहयोग से बच्चें ये कर पाते हैं। आप इनका ऐसे ही मार्गदर्शन करते रहिए। ई पत्रिका एक अच्छा माध्यम है बच्चों का ज्ञान बढ़ाने के लिए। इस प्रयत्न को जारी रखिए। धन्यवाद

कनिष्ट नायक

सुषमा नायक

मेरा नाम शेख कमाल बख्श है| मैं हफिजा, (+3 द्वितीय वर्ष) का पिता हूँ। मैं बहुत खुश हूँ कि मेरी बेटी इस ई पत्रिका में अपना योग दे रही हैं| सारे बच्चे बहुत ही अच्छे लेख लिख रहे हैं| मैडम मैं आपको धन्यवाद करना चाहता हूँ कि आपकी वजह से बच्चे कुछ नया सीख रहे हैं| आप हमेशा बच्चे को कुछ नया नया करना सिखायें| और मैं बहुत हि खुश हूँ कि इस ई पत्रिका में हिन्दी विभाग की सारी लड़कियों ने आपको भरपुर सहयोग किया है| मेरी यही कामना है कि यह बहुत ही आगे बढ़े और हमेशा बच्चे कुछ नया सीखें| मेरी तरफ से बहुत बहुत शुभकामनाएं और मैडम को मेरा बहुत बहुत धन्यवाद।

शेख कमाल बख्श

मैं स्तुति प्रज्ञा, (+3 द्वितीय वर्ष) की माँ हूँ। इस ई-पत्रिका के द्वारा हमारे बच्चों के लेखन में काफी सुधार हुआ है। पत्रिका में बच्चों के लेख पढ़ कर बहुत खुशी मिलती है। हिंदी भारती की वजह से मेरी बेटी ने टेक्नॉलोजी से भी दोस्ती कर ली है, यहाँ तक कि मैंनें भी फोन पर हिंदी में टाइप करना सीख लिया है। धन्यवाद।

संध्या रानी दास

बाबा नागार्जुन

https://youtu.be/bq7onO9i-8A

यादों के गलियारों से

व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण में विभाग की छात्रायें

अभिभावकों के साथ अंतरंग चर्चा

नई छात्राओं का विभाग में स्वागत

“कलम” शृंखला में युवा साहित्यकार भगवंत अनमोल के साथ विभाग की छात्रायें

धन्यवाद